भारत के प्रमुख नदी घाटियों की जल क्षमता कितनी है?

नदी घाटी (नदी बेसिन) ज़मीन का एक क्षेत्र है जहां का समस्त वर्षाजल, पिघली बर्फ या बर्फ एक बिंदु (आमतौर पर बेसिन का निकास बिंदु) तक एकत्रित हो होता है वहाँ से पानी नदी में शामिल होता है।
भारत में नदी तंत्रों को चार समूहों में वर्गीकृत किया गया है - हिमालयी नदियां, डेक्कन नदियों, तटीय नदियों और अन्तर्वाही नदियां। इनको बारह प्रमुख बेसिन और आठ समग्र बेसिनों में विभाजित किया गया है।

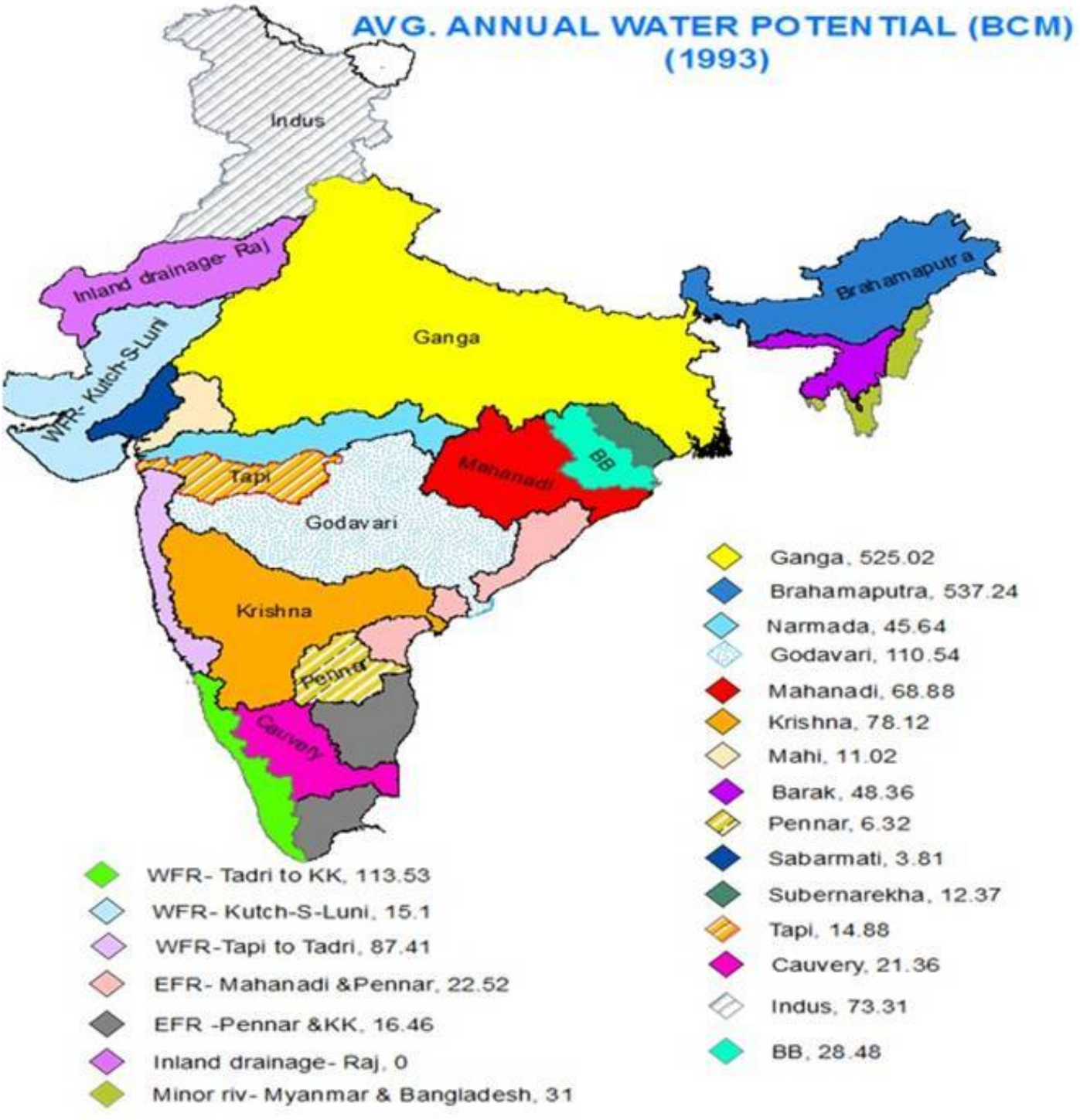

भारत के भूतल के जल संसाधन

राष्ट्रीय एकीकृत जल संसाधन विकास आयोग (NCIWRD, 1999) के अनुसार भारतीय नदी तंत्रों में बेसिन-वार औसत वार्षिक प्रवाह 1953 घन किमी है। ग्राफ़िक्स में बेसिन-वार औसत वार्षिक प्रवाह का विवरण दर्शाया गया हैं। प्राकृतिक जल स्रोत से जितना भाग जल निकला जा सकता है वह उपयोगी जल संसाधन कहलाता है। भौगोलिक स्थितियों और सामाजिक-राजनीतिक वातावरण, कानूनी और संवैधानिक बाधाएं और वर्तमान तकनीक उपलब्धता को मध्यनजर रखते हुए, विभिन्न प्राधिकरणों द्वारा सतही पानी की उपयोगी मात्रा का भिन्न भिन्न मूल्यांकन किया गया है। देश का उपयोगी सतही पानी की वार्षिक मात्रा 690 घन किमी है।

गंगा-ब्रह्मपुत्र घाटियों में, भूटान और नेपाल जैसे पड़ोसी देशों के उपयुक्त स्थानों पर, जल-भंडारों के निर्माण द्वारा पानी के उपयोग में वृद्धि की काफी संभावनाएं हैं।

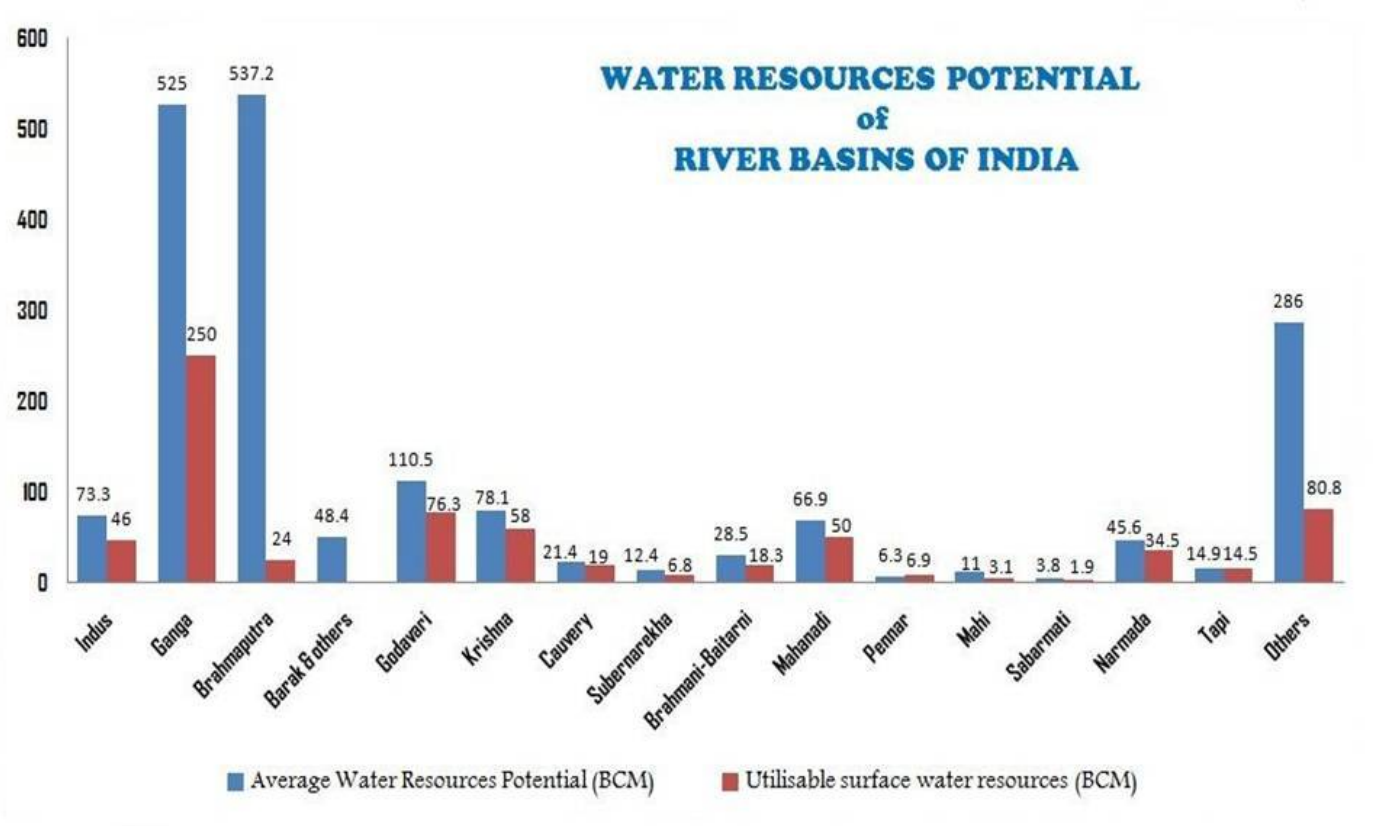

भारत के भूजल संसाधन

भारत में बारिश से सालाना संभावित प्राकृतिक भूजल पुनर्भरण 342.43 घन किमी है, जो देश की कुल वार्षिक वर्षा का 8.56% है। नहर सिंचाई प्रणाली से वार्षिक संभावित भूजल पुनर्भरण क्षमता लगभग 89.46 घन किमी है। सिंचाई के लिए उपलब्ध भूजल संसाधन 361 घन किमी हैं, जिनमें से उपयोगी मात्रा 325 घन किमी (90 %) है।

अगला अध्याय >>
औसतन, हर भारतीय नागरिक के लिए कितना पानी उपलब्ध है?